आध्यात्मिक
चित्र प्रदर्शनी
(Spiritual Art Gallery)

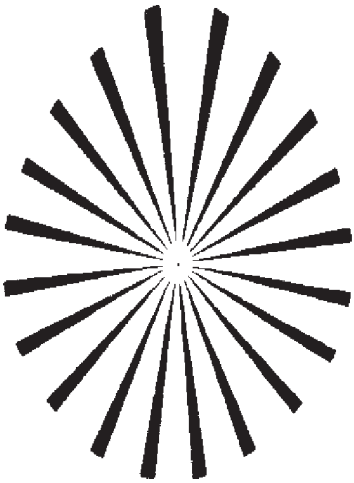

ब्रह्माकुमारी एकेडमी फॉर ए बैटर वर्ल्ड
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत (राजस्थान)

प्रकाशक :
साहित्य विभाग
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
पाण्डव भवन, आबू पर्वत (राजस्थान) - 307 501
☎ 38261

प्रथम संस्करण 1997 - 5000
द्वितीय संस्करण 1998 - 5000

पुस्तक मिलने का पता :
साहित्य विभाग,
पाण्डव भवन,
आबू पर्वत–307 501 (राजस्थान)

मुद्रक :
ओम्शान्ति प्रेस,
शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)
☎ **28124. 28125. 28126**

© **Copyright :** Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya, Mount Abu, (Raj)
No part of this book may be printed without the permission of the publisher.

आध्यात्मिक
चित्र प्रदर्शनी
अमृत सूची

- स्वर्ग की स्मृति – स्वागतम्
- आने वाली स्वर्णिम दुनिया
- भूले हुए सत्यों का अन्वेषण
- पुन: जागृति
- सहज राजयोग
- परमधाम से आत्माएँ स्वर्ग में उतरती हुईं
- सच्चे सम्बन्ध से ही सुख और प्रेम की अनुभूति
- पवित्रता ही स्वर्ग का सार है
- यह सम्पूर्ण प्रसन्नता का युग है
- वहाँ विश्व का सुख बाधा रहित है
- प्रकृति अपनी उच्चतम् अवस्था को प्राप्त करती है
- वहाँ फल, पुष्प,जल,वायु आदि प्रफुल्लित करते थे
- स्वर्ग कहाँ खो गया!
- स्वर्ग प्राय:लोप
- प्रथम पूजा
- हज़रत मूसा
- महात्मा बुद्ध
- जीसस क्राईस्ट
- मुहम्मद साहेब

- माईकल – सर्वश्रेष्ठ देवदूत, प्रतिमा का भावार्थ
- पाण्डव और कौरव
- कर्म-सिद्धांत
- विश्व के उत्थान और पतन की अद्भुत कहानी
- कलियुग
- चुनौती
- परमप्रिय परमपिता परमात्मा
- आत्मा और शरीर, याद की यात्रा
- फ़रिश्ता
- आत्म-शक्तियाँ
- अष्ट-शक्तियाँ
- स्व-अनुशासन
- चतुर्भुज विष्णु – सम्पूर्णता का प्रतीक
- पुनर्जन्म
- विश्वकल्याणी पुरुषोत्तम संगम-युग
- कल्प वृक्ष – मानवता का वृक्ष
- काल-चक्र
- संसार की चिकित्सा
- रत्न-पारखी
- मानवता के आदि पिता – प्रजापिता ब्रह्मा
- सम्पूर्ण परिवर्तन
- अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय

आध्यात्मिक
चित्र प्रदर्शनी

स्वर्ग की स्मृति

समय के पूरे चक्र में प्रत्येक संस्कृति में, प्रत्येक देश में, मनुष्य की अवचेतना में 'सम्पूर्णता की स्मृति' रही है। नर एवं नारी में स्वर्ण काल की एक गहरी छाप रही है।

पौराणिक कथायें जो कि जातीय कथाकारों के द्वारा स्थान-स्थान पर सुनाई गईं, चाहे वह महान धार्मिक शास्त्रों से हैं, चाहे विद्वानों द्वारा पढ़ी गई हैं, चाहे पण्डितों द्वारा चर्चा की गई हैं, लेकिन उनकी मान्यतायें एवं विश्वास एक समान ही रहे कि *'एक समय यह संसार सुन्दर एवं समृद्ध था, शान्ति एवं सुख से भरपूर था।'*

'स्वर्ग के इस समय में मनुष्य-आत्मायें देवी-देवता थे।'

ओमशान्ति

स्वागतम्

विश्व की चारों दिशाओं से सबके सहयोग एवं उदार भावनाओं से चित्र प्रदर्शनी का निर्माण हुआ है। यह प्रकाश और ध्वनि, कविता और कला का संगम है। इससे भी बढ़कर यहाँ ईश्वर के प्रति प्यार है। विशेष रूप से आपको अनुभूति कराने के लिए समर्पित है।

ईश्वरीय सेवा में,
ब्रह्माकुमार एवं
ब्रह्माकुमारियाँ

प्रजापिता ब्रह्मा के मुखारविन्द से
निराकार परमपिता परमात्मा

शिव-भगवानुवाच

आने वाली स्वर्णिम दुनिया की झलक

सत्यता के इस युग में, मानव के सर्व सम्बन्धों के बीच प्यार होगा, सब जगह परिपूर्णता होगी इसलिए मानव में 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्थिति होगी। प्रकृति, वस्तुयें और समय आपके विनम्र सेवाधारी होंगे।

हर चीज़ परमानन्द प्रदान करेगी, वहाँ दु:ख का नामो-निशान नहीं होगा। जिसका नाम ही 'स्वर्ग' है उसके विषय में और ज़्यादा क्या कहा जाये!

भूले हुए सत्यों का अन्वेषण

हमारा विश्व गरीबी से पीड़ित हो रहा है। हिंसा एवं व्याकुलता के अंधकार में डूब रहा है। हर एक का अंत:करण दु:ख से भारी तथा अकेलेपन से रिक्त है, जो खुशी से नाच नहीं सकता। फिर भी मानव जाति के हृदय में स्वर्ग के स्वप्न का संगीत दूर प्रतिध्वनि में गूंजता ही है।

क्या यह सिर्फ़ एक स्वप्न है या एक सत्य समय था – जो अब भूतकाल के धुँध में छिपा है!

पुनः जागृति

एक समय था – जब यह संसार सर्व के लिए उपयुक्त स्थान था। इस संसार में हर चीज़ सम्पूर्ण और बेदाग़ थी। इस विश्व के हृदय में मानवता का वह परिवार था जिससे स्नेह और समीपता का अनुभव होता था, इससे ही पूरा विश्व खुशनुमा तथा जीवन्त था।

सद्भावना और आपसी प्यार ही मानव परिवार की विशेषता थी, जो स्वर्ग के समय विद्यमान थी। वास्तव में यही जीवन का सूत्र है। अगर हम उन्हीं गुणों को पुनः जागृत करें तो हम कल्पना से अधिक बदल जायेंगे।

आज वर्तमान संसार की जो स्थिति है, वह हमारे ही किये हुए कर्मों का परिणाम है। यदि हम स्वयं परिवर्तित होंगे तो हम विश्व परिवर्तन कर सकते हैं, लेकिन अकेले किसी में भी वह सामर्थ्य नहीं है।

सहज राजयोग

परमपिता परमात्मा ही अविनाशी और नि:स्वार्थ स्नेह के दाता हैं, उनसे सर्व सम्बन्ध स्थापित करना ही 'सहज राजयोग' है। इस योग से ही श्रेष्ठ शक्तियों की प्राप्ति होती है और स्वयं में स्थायी परिवर्तन आ सकता है।

पवित्रता की शक्ति प्राप्त करने के लिए हमें पूर्ण नि:स्वार्थ मार्ग दर्शन की आवश्यकता है, जो स्वयं ईश्वर ही प्रदान कर सकते हैं। उनके साथ यथार्थ योग रखने से ही सब कुछ सम्भव है। अब समय आ गया है कि हम ईश्वर-प्रदत्त दिव्य ज्ञान-चक्षु द्वारा परमात्मा को पहचान कर अपने मन-बुद्धि को उनमें एकाग्र करें।

परमधाम से आत्माएँ स्वर्ग में उतरती हुईं

प्राचीन ज्ञान हमें शिक्षा देता है कि – हम आत्माएँ हैं, अदृश्य शक्ति हैं।

ज्योति बिन्दु स्वरूप में भृकुटि के मध्य निवास करती है। आप शरीर नहीं हैं परन्तु आप 'आत्मा' हैं। आप अनादि हैं। आत्मा अपना प्रथम जन्म स्वर्ग में लेती है। जबकि विश्व में सम्पूर्ण सुख-शान्ति है। वहाँ विश्व की सम्पन्नता में कोई बाधा नहीं है क्योंकि प्रत्येक जानता है कि वह 'आत्मा' है। उन्हें एक दूसरे से मतभेद उत्पन्न करने वाली दुर्भावनाओं की अविद्या है।

विश्व एक था। सम्पूर्णता के कारण लोग प्यार से रहते थे और उस पवित्र स्नेह ने विश्व एकता को स्पटीक के समान स्पष्ट एवं मजबूत रखा।

सच्चे सम्बन्ध से ही सुख और प्रेम की अनुभूति

'Koran, Sura XLIII - 70-72'

''बगीचे में प्रवेश करते ही आप और आपकी पत्नी प्रसन्न हो जायेंगे।

वहाँ पर पहुँचते ही आपको सोने के पात्रों में तथा पीने के प्यालों में जो भी आपकी उत्कण्ठा होगी, वह प्राप्त होगा, आपके नेत्र प्रसन्नता से भरपूर हो जायेंगे और आप वहाँ ही रहना चाहेंगे। यह सुन्दर बगीचा, आपने जो श्रेष्ठ कर्म किये हैं, वह आपको वर्से के रूप में प्राप्त हुआ है।''

पवित्रता ही स्वर्ग का सार है

'The Bible - Ezekiel 28 : 126-15'

''आप एक समय सम्पन्नता के उदाहरण थे। कितने खूबसूरत और बुद्धिमान थे! आप ईश्वर के बगीचे (इडेन) में रहते थे और आप हर प्रकार के रत्नों से सुसज्जित थे.... जिस दिन से आपकी रचना हुई उस दिन से आपका चरित्र उत्तम था।

फिर धीरे-धीरे आपने उल्टे कर्म करने शुरू किये।''

यह सम्पूर्ण प्रसन्नता का युग है

'Chuang Tzu, China, Fourth Century B.C.'

दिव्य गुणों के इस युग में वे सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी अपनी सर्वश्रेष्ठता से अनभिज्ञ रहते हैं। वे एक दो को प्यार करते थे यह बिना जाने कि ऐसा करना कुछ देना है। वे ईमानदार एवं दिल से वफ़ादार रहते थे, बिना यह जाने कि यह एक अच्छा निश्चय है। वे एक दूसरे से लेन-देन करते थे, बिना यह सोचे कि वे कोई तोहफ़े का लेन-देन कर रहे हैं। इसलिए उनके कर्म और सम्बन्धों का कोई हिसाब नहीं रहा।

वहाँ विश्व का सुख बाधा रहित है

'Plato, Critias 120e, 121a'

''पीढ़ियों तक, जब तक मनुष्यों में दिव्यता विद्यमान रही, तब तक वे नियमों के प्रति ईमानदार रहे थे, क्योंकि उस समय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विद्वत्ता और नम्रता में सामन्जस्य बनाये रखने वाली महान एवं सम्माननीय आत्मायें विद्यमान थीं।''

प्रकृति अपनी उच्चतम् अवस्था को प्राप्त करती है

'Vayu Puran 8, 17

उस कृत-युग, सम्पूर्ण-युग में....वे खुशी और श्रेष्ठता से भरपूर थे। वे स्वतंत्र एवं सदा प्रसन्न थे.....उनकी उस सम्पूर्णता ने शक्ति और सौन्दर्य को जन्म दिया और रोगों को समाप्त कर दिया। उन्होंने सदा युवा अवस्था को भोगा.....''

वहाँ फल, पुष्प, जल, वायु आदि– प्रफुल्लित करते थे

'1A Midrashan from the Talmud;
pre-medieval Hebrew'

''गान इडेन में प्रवेश, चमचमाते मणिकों के द्वारा होता है, जिसकी साठ हज़ार फ़रिश्तों के द्वारा रक्षा होती है। वहाँ मेहन्दी एवं आठ सौ प्रकार के गुलाबों की खुशबू से सुगन्धित एक बगिया है।''

स्वर्ग कहाँ खो गया!

जब स्वर्ग अपने अन्तिम समय पर पहुँचा तो संसार में दु:ख प्रारम्भ हुआ। अब तक आत्मा शरीर में इतना लम्बा समय रह चुकी थी कि वह अपनी आत्मिक स्मृति को खोकर अपने आपको शरीर मानने लगी। इससे धीरे-धीरे उसकी शक्ति का क्षय होने लगा और उसमें यह भ्रम उत्पन्न हुआ कि शरीर के अन्त के साथ उसका भी अन्त हो जायेगा और इसी से भयभीत होकर उसने 'प्यार के सिद्धान्तों' को कानूनी शासन में बदल दिया। आत्मा की विस्मृति के साथ ही मनुष्य ने सन्तुष्टता के लिए और जीवन को सार्थक करने के लिए बाह्य खोज शुरू की। जीवन जीने की वास्तविक कला को भूल गये।

स्वर्ग प्रायःलोप

सर्प अन्धकार का प्रतीक है।

आदम और हौवा, नर एवं नारी जो कभी सम्पन्न थे, आज भय और शर्म से छुपते फिर रहे हैं। श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण, नर एवं नारी जो कभी सम्पूर्ण थे, आज विस्मृति और भटकाव के बहाव में बहते जा रहे हैं। पूर्व और पश्चिम के चिह्न भले ही भिन्न हों, परन्तु स्वर्ग के विलुप्त होने के प्रतीक मात्र ही है।

प्रथम पूजा

द्वापर युग के प्रारम्भ में **राजा विक्रमादित्य** को परमात्मा का साक्षात्कार हुआ, उस साक्षात्कार ने उन्हें **विश्व के प्रथम मन्दिर – सोमनाथ** के निर्माण की प्रेरणा दी। उन्होंने इसे अकल्पनीय बहुमूल्य रत्नों से सुसज्जित किया। मन्दिर के एकदम मध्य में कोहिनूर हीरा लगा हुआ था, जो कि परमपिता परमात्मा शिव की परम-ज्योति – ''**ज्योतिर्लिंग**'' का प्रतीक था।

हज़रत मूसा

मूसा के प्राचीन धर्म शास्त्र में ईश्वर के नियमों को दस आदेशों का रूप दिया गया है। प्रथम पाँच में ईश्वर के लिये मनुष्य का क्या कर्त्तव्य है तथा दूसरे पाँच में मनुष्य का एक दूसरे के प्रति क्या कर्त्तव्य है, उसके बारे में शिक्षा दी गई है। उन्होंने मानव जाति को बताया कि प्रायश्चित द्वारा मुक्ति प्राप्त की जा सकती है और संसार को यह सांत्वना दी कि स्वर्ग फिर से आयेगा।

महात्मा बुद्ध

महात्मा बुद्ध से मध्यम मार्ग का, एवं कर्म की गति का ज्ञान प्राप्त हुआ। प्रत्येक मनुष्य अपने सुख-दु:ख के लिये स्वयं जिम्मेवार है। इच्छायें दु:ख का कारण हैं। अत: हमें स्वयं को इन्द्रियों की अधीनता से मुक्त करना चाहिए। ''वर्तमान – भूत का परिणाम है तथा भविष्य – वर्तमान का परिणाम होगा।''

जीसस क्राईस्ट

'Bible: 1 John 3:1'

जीसस क्राईस्ट ने शिक्षा दी थी कि हम ईश्वर की प्रिय संतान हैं.....हमें उनके समान बनने की इच्छा उत्पन्न होनी चाहिए। ''देखो, परमात्मा ने हमें अपने बच्चे कहकर कितना प्यार दिया है! वही हमारा वास्तविक सत्य है।''

'Bible: Matthew 5.48'

''तुम्हें स्वर्ग के रचयिता ईश्वर पिता के समान सदाचारी और सम्पूर्ण होना चाहिए।''

मुहम्मद साहेब

'Sura - 5, verse 122'

कुरान सर्वशक्तिवान ईश्वर के प्रति उच्चतम् समर्पण की शिक्षा देता है। ''स्वर्ग एवं धरती की सारी सम्पत्ति का स्वामी ईश्वर है तथा सभी वस्तुओं पर उसका ही आधिपत्य है।''

माईकल – सर्वश्रेष्ठ देवदूत

माईकल ऐसी आत्मा का प्रतीक है, जो ईश्वर पर सम्पूर्ण समर्पित है और प्रभु प्रेमी है। जिसने शैतान लुसीफर पर विजय प्राप्त की। गोलाश्म पर उसका स्पर्श उसे धराशायी कर देता है और वह उस प्राचीन शैतान का इस प्रकार संहार करता है।

ईसाई, यहूदी और मुसलमान परम्परा में माईकल – प्रकाश का राजकुमार है, वह 'फ़रिश्तों' में अग्रणी दिखाया गया है। वह न स्त्री है, न पुरुष है। क्योंकि फ़रिश्ते दोनों से न्यारे हैं। इसके नाम का अर्थ है – ''वह जो ईश्वर के समान है।'' उसने पवित्रता के बल से शैतान पर विजय प्राप्त की।

जीवन में 'पवित्रता' मनुष्य आत्मा को फ़रिश्ता बनने की शक्ति प्रदान करती है, और स्नेह एवं ज्ञान से हम अपने शत्रु को जीत सकते हैं। स्वयं की अपवित्रता ही महाशत्रु है। अपवित्रता को जीतना ही, वास्तविक रूप में सच्ची विजय है।

प्रतिमा का भावार्थ

माईकल ने अग्नि की मशाल पकड़ी है। यह असुरों के विनाश के लिए है। अग्नि योग की है.... एकाग्रता की शक्ति से आसुरी वृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं।

दूसरे हाथ में माईकल ने तराजू पकड़ा हुआ है, जो सम्पूर्ण सन्तुलन का प्रतीक है। जब जीवन में सच्चे ज्ञान और योग का सन्तुलन होता है, तब आत्मा न्यारी, प्यारी और निर्भय बन जाती है।

लुसीफर (शैतान) के कान बन्द हैं, जो सत्यता को सुन नहीं सकते। यह अहंकार और देह-अभिमान का प्रतीक है। उसके लम्बे नाखून लोभ और बन्द मुट्ठी क्रोध का प्रतीक है। उसका मन विकारी वासनाओं से भरपूर होने के कारण श्रेष्ठ कर्म नहीं कर सकता है, इसलिए पत्थर बन जाता है।

पाण्डव और कौरव

'महाभारत' के सार में एक धर्म युद्ध की कहानी है। वह युद्ध जिसमें पाण्डव – धर्म व ईश्वर की शक्ति के प्रतीक हैं तथा कौरव – अन्याय और अधर्म के प्रतीक हैं। उनके बीच कलह एवं मतभेद पर यह महाकाव्य आधारित हैं।

श्रीकृष्ण जो कि ईश्वर के प्रतीक हैं, वे पाण्डवों को विजय के लिये प्रोत्साहित करते हैं तथा प्रेरणा व सहयोग देते हैं।

कर्म-सिद्धांत

वैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार –

'हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है।'

आध्यात्मिक सिद्धांत के अनुसार –

'जैसा बोयेंगे वैसा ही पायेंगे।'

कर्म अर्थात् क्रिया। कर्म रहित जीवन असम्भव है।

जैसे हर श्वाँस हम लेते हैं और उच्छ्वास निकालते हैं। वैसे हमारे कर्म सकारात्मक हों या नकारात्मक, प्रत्येक कर्म जो हम करते हैं उसकी समान-प्रतिक्रिया पाते हैं।

जो भी इस विश्व से हम लेते हैं
वह हमें वापिस देना होगा। जो भी हम देते है
वह हमें वापिस मिलना ही होगा।

विश्व के उत्थान और पतन की अद्भुत कहानी

विश्व का इतिहास 'सीढ़ी' के समान है। यह एक ऐसी सीढ़ी है जो उतरती कला का प्रतीक है। विश्व और मानव ने समय के साथ इस सीढ़ी की चोटी से जीवन आरम्भ किया। आदिकाल में यहाँ पर पूर्ण सुख-शान्ति और प्रसन्नता है लेकिन उतरती कला होने के कारण मानव त्रेतायुग में प्रवेश करता है। फिर भी यह दोनों युग सुन्दर और प्रसन्नचित्त रखने वाले हैं।

इससे नीचे उतरने पर द्वापर युग में मानव भ्रमित होता है और उसमें आराधना एवं मोक्ष की कामना जागृत होती है और नीचे आने पर कलियुग में मानसिक और शारीरिक दोनों स्तर पर प्रदूषण, दु:ख और अकेलापन, हिंसा और असमानता आदि नकारात्मक वृत्तियों की प्रवेशता होती है।

जब सब आशायें समाप्त हो जाती हैं तो परमपिता परमात्मा ''शिव'' अपनी प्रतिज्ञा अनुसार हमें पुन: अपने प्रेम का सहारा देते हैं। वे हमें सत्य की नाव में बिठाकर इस दु:ख और भ्रमयुक्त नदी के इस पार से उस पार ले जाते हैं। जहाँ हमारा प्यारा घर – 'परमधाम' (ब्रह्मलोक) है। वहाँ से ही हम आत्मायें यहाँ पार्ट बजाने आती हैं।

कलियुग

कल्प वृक्ष में प्रत्येक धर्म की अपने समय पर शाखा प्रकट होती है।

प्रत्येक धर्म, शक्ति और पवित्रता से शुरू हुआ, परन्तु जैसे-जैसे समय गुजरा तो कमज़ोर होता गया और संसार को – द्वापर युग से कलियुग में परिवर्तित होने से कोई भी रोक न सका।

चुनौती

प्राकृतिक सन्तुलन बिगड़ गया है। हमारा ग्रह क्षतिग्रस्त हो गया है। उसे सहायता की अत्यन्त आवश्यकता है। अनगिनत सिद्धांतों ने हमें यह नहीं बताया – कि इसे कैसे स्थिर किया जावे?

विज्ञान के द्वारा हम जीवन को नियंत्रित करना चाहते हैं, फिर भी हम स्वयं को नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं।

''प्रसन्नता'', एक समय मानव जीवन का सहज स्वभाव था। आज हम उसकी ही खोज में जीवन का अधिकांश समय लगा रहे हैं और यदि हमें वह प्राप्त हो भी जाती है तो हम उसे स्थायी नहीं रख पाते हैं।

हम निराश नहीं हुए हैं। गहन अंधकार में आशा की एक किरण ज्ञान के रूप में अभी भी दिखाई देती है – जो आपको धारण करनी है। यह आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है।

आईये और देखिये, क्या आप यह चुनौती स्वीकार करना चाहते हैं या नहीं!!

परमप्रिय परमपिता परमात्मा

परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप हैं, वह चैतन्य हैं, सत्य हैं, वह सदा ही सम्पूर्ण पवित्र हैं।

वह सभी आत्माओं के परमपिता हैं इसलिए उनका कर्त्तव्य ऊँच व दिव्य है। वे पतित-पावन हैं, मुक्ति-जीवनमुक्ति के दाता हैं तथा अपने बच्चों के लिये नये विश्व का पुनर्निर्माण करते हैं।

मनुष्य आत्मा के समान, परमात्मा भी – अनादि, अविनाशी, अति सूक्ष्म ज्योतिर्मय बिन्दु स्वरूप हैं, परन्तु एक मुख्य अन्तर यह भी है कि वह कभी मनुष्यात्मा के समान सृष्टि पर जन्म-मरण में नहीं आते। उनका अविनाशी नाम 'शिव' है, जिसका अर्थ है–'कल्याणकारी'। जोकि उनके सर्वश्रेष्ठ कर्त्तव्य की याद दिलाता है।

आत्मा और शरीर

आत्मा एक चैतन्य, अभौतिक, अविनाशी ऊर्जा है जोकि शरीर को जीवन प्रदान करती है तथा गति एवं भाव प्रदर्शन के लिये उत्तरदायी है। मनुष्य – इस शरीर द्वारा कार्य करने वाली एक चैतन्य शक्ति आत्मा है। आत्मा ही सोचती, समझती एवं भाव प्रदर्शन करती है।

आत्मा के बिना शरीर जड़ है और शरीर के बिना आत्मा कोई भी कर्म नहीं कर सकती।

याद की यात्रा

किसी भी समय और किसी भी स्थान पर हम अपने दिल और दिमाग से भगवान के साथ मिलन मना सकते हैं तथा उनके स्नेह एवं शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। आवश्यकता है– मात्र उन्हें पहचान कर सम्बन्ध स्थापित करने की। सम्बन्ध और प्राप्तियों की स्मृति से याद सहज व निरन्तर रहती है।

फ़रिश्ता

''फ़रिश्ता'' एक ऐसा मानव है, जो ईश्वरीय स्नेह एवं ज्ञान द्वारा देह सहित, देह के सम्बन्धों एवं पदार्थों के बन्धन से मुक्त हो चुका है। श्वेत दिव्य प्रकाश युक्त सूक्ष्म वतन के प्रति उसे आकर्षण हुआ और इसी लोक में सर्व फ़रिश्ते रहते हैं। फ़रिश्तों का अंत:करण परमात्म प्यार से भरपूर रहता है।

फ़रिश्ते अपनी प्रकाश की काया द्वारा मानवता की सेवा के लिए ईश्वरीय सन्देश प्रसारित करते तथा मनुष्य आत्माओं का पथ-प्रदर्शन एवं सुरक्षा प्रदान करते हैं।

फ़रिश्ते विशेषत: नैन मुलाकात करते हैं। फ़रिश्तों के नैन अनादि स्वरूप का साक्षात्कार कराते हैं, जिसके द्वारा मानव ईश्वर की झलक प्राप्त कर सकता है।

आत्म-शक्तियाँ

समुद्र के दो रूप की तरह – जीवन या तो शान्त और सुन्दर हो सकता है या पीड़ाकारी और भयानक हो सकता है। आत्म-शक्तियाँ हमें स्वयं पर नियंत्रण करने की शक्ति प्रदान करती हैं। हमारे जीवन रूपी समुद्र में शान्ति की लहरें ले आती हैं और स्वयं पर शासन करने का सामर्थ्य प्रदान करती हैं। इस वर्तमान युग में कई चीज़ें अपने वास्तविक स्वरूप से भिन्न प्रतीत होती हैं।

अष्ट शक्तियाँ

१. **परखने की शक्ति** से जो जैसा है, उसे वैसा ही देखा व अनुभव किया जा सकता है।

२. हमारे जीवन का स्तर हमारी धारणाओं पर निर्भर करता है। सही चुनाव के लिये **निर्णय शक्ति** आवश्यक है।

३. **विस्तार को समाने की अर्थात् न्यारे बनने की शक्ति** बाह्य तनाव-युक्त वातावरण में भी हमें अन्तर्मुखी और शान्तचित्त बनाती है।

४. **समेटने की शक्ति** से मनुष्य आत्मा परम शान्ति और विश्राम का अनुभव करती है।

५. **सहन शक्ति** हमें परिस्थितियों में एवं विभिन्न संस्कारों के लोगों में सम्मान और समझ उत्पन्न करती है।

६. **समाने की शक्ति** यानि परिस्थिति अनुसार अपने को ढाल लेना। जो झुकना जानता है वह कभी टूटता नहीं चाहे कितने भी तूफ़ान क्यों न आयें।

७. **सहयोग शक्ति** यानि संगठन की शक्ति से सफ़लता प्राप्त करना। जो कार्य एक व्यक्ति नहीं कर सकता वह दो कर सकते हैं। जो दो नहीं कर सकते वह दस मिलकर कर सकते हैं।

८. **सामना करने की शक्ति** होने से हम सम्मानपूर्वक जी सकते हैं, चाहे कितने ही विघ्न क्यों न आयें। यह साहस से ही सम्भव है।

स्व-अनुशासन

रथ – मनुष्य-देह का प्रतीक है और अश्व – पाँच इन्द्रियों के प्रतीक हैं। रथी स्वयं आत्मा है और वह इन्द्रियों को नियंत्रित करती है। मानव की इन्द्रियाँ वास्तव में अश्व की तरह हैं जो उसे कई दिशाओं में भटकाती हैं और जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करती हैं। जब हम यह सोच कर जीवन जीते हैं कि हम शरीर हैं तो हम अपनी इन्द्रियों के वश होने लगते हैं और हम इनकी तृप्ति में ही समय गँवाने लगते हैं। हम परवश हो जाते हैं। हमारी इन्द्रियाँ हमें चलाने लगती हैं। वह शक्तिशाली हो जाती हैं और हमारी आज्ञा के विपरीत चलती हैं। अगर उन्हें नियंत्रित नहीं किया जाये तो वह जीवन को बिल्कुल ही निरउद्देश्य कर देती हैं।

इसलिए हमेशा अपने में यह स्मृति रखें कि – 'मैं एक आत्मा हूँ।' हमेशा यह अभ्यास करने की कोशिश करें कि – **''मैं कौन हूँ?''** जितना ही हम अपने को इस शरीर से न्यारा 'आत्मा' समझेंगे उतना ही हमारी इन्द्रियाँ हमारी आज्ञा पर चलेंगी। जैसा हम चाहेंगे वैसा ही ये इन्द्रियाँ चलेंगी। आत्म-स्मृति की स्थिति ही हमें इन्द्रियों का शासक बना देती है। इस आत्म-निश्चय की स्थिति से जीवन संयमित तथा सुखद बन जाता है।

चतुर्भुज विष्णु – सम्पूर्णता का प्रतीक

'चतुर्भुज विष्णु' स्वर्ण युग में नर और नारी के सम्पूर्णता, सन्तुलन और समानता का प्रतीक है। सम्पूर्ण देव श्रीनारायण और सम्पूर्ण देवी श्रीलक्ष्मी आदर्श परिवार के प्रणेता हैं। इस सम्पन्नता व श्रेष्ठता का रहस्य वर्तमान समय का आध्यात्मिक ज्ञान एवम् पुरुषार्थ है। इस संदर्भ में विष्णु की चार भुजाओं में – इस सम्पन्नता को प्राप्त करने के लिये चार अलंकार हैं।

स्वदर्शन चक्र– अपने शक्ति स्वरूप को जानने का प्रतीक है, अर्थात् पूरे चक्र में जो भूमिका है उसे स्वयं ही देखना कि कैसे आत्मा इस अभिनय के दौरान पहले अपने असली सत्य स्वरूप में स्थित रहती है। फिर धीरे-धीरे देह-अभिमान के कारण वह स्वरूप विस्मृत हो जाता है, अब पुन: उसे अपने वास्तविक स्वरूप की स्मृति आई है। वह कल्प पूर्व अनुसार फिर से सत्य स्वरूप बनेगी ही।

गदा– विकारों पर विजय का प्रतीक है। योग की शक्ति और आध्यात्मिक ज्ञान से मनुष्य सभी प्रकार की अपवित्रता को जीत सकता है। राजयोग द्वारा वह अलौकिक शक्ति प्राप्त होती है।

शंख– सत्य ध्वनि का प्रतीक है। जब सत्य वचन उच्चारे जाते हैं तो हमारे शब्द दूसरों को लाभ पहुँचाते हैं और उनकी सेवा करते हैं। सर्वोच्च सेवा, ईश्वर का सत्य ज्ञान प्रदान करता है।

कमल पुष्प– पवित्र प्रवृत्ति मार्ग का प्रतीक है। पवित्रता अर्थात् मन और बुद्धि की स्वच्छता, जिससे जीवन में सत्यता आती है।

दुहरा ताज– पवित्रता एवं सर्व प्राप्तियों का प्रतीक है।

गले में माला– संघटित रूप में विजय का प्रतीक है।

पुनर्जन्म

काल-चक्र में अनादि रूप से चक्र लगाते हुए आत्मा ने विभिन्न शरीर धारण किये। आत्मा– व्याधि, दुर्घटना और वृद्धावस्था के कारण शरीर छोड़ती है व पुनर्जनम लेती है। कर्मों के अनुसार आत्मा को अलग-अलग जन्म में स्त्री या पुरुष शरीर प्राप्त होते हैं। वह किसी भी जाति, देश या संस्कृति में जन्म ले सकती है। जैसे-जैसे सृष्टि-चक्र में समय व्यतीत होता है, वैसे-वैसे हमारे शरीर भी क्षीण और अपवित्र होते जाते हैं।

परन्तु विश्व-नव निर्माण के साथ ही – प्रकृति का भी नव निर्माण होता है।

विश्व कल्याणी
पुरुषोत्तम संगम युग

सृष्टि चक्र में यह समय बहुत मूल्यवान है क्योंकि इसी समय ईश्वर धरा पर अवतरित होते हैं।

ईश्वर अपनी पूजा कराना या अपने आगे झुकाना नहीं सिखाते हैं। वे तो ''श्रीमत'' देकर उन पर चलना सिखाते हैं। वे हमें स्मृति दिलाते हैं कि हम आत्मायें अनादि, अविनाशी, ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं और शरीर में भृकुटी के बीच विराजमान हैं।

हम आत्मायें आध्यात्मिक विधि से ही अपनी खोई हुई दैवी शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। पुरुषोत्तम संगमयुग में ईश्वर हमें अनुभूति कराते हैं कि वह सत्य हैं, अविनाशी हैं, सदा पवित्र हैं।

वे परम-आत्मा है। हम जिस रूप में थे उसी रूप में उन्होंने हमें प्यार किया और हम जिस रूप में भी परिवर्तित होंगे उस रूप में भी वे हमें प्यार करेंगे और इससे भी बढ़कर यह कि वे हमें अब भी प्यार कर रहे हैं।

कल्प वृक्ष – मानवता का वृक्ष

'कल्प वृक्ष' संसार का प्रतीक है। इसमें मानव जाति के अभ्युदय और विकास की कहानी निहित है।

कल्प वृक्ष के तने का प्रारम्भ स्वर्ण युग का प्रतीक है। तने के थोड़ा ऊपर जहाँ त्रेतायुग, द्वापरयुग में परिवर्तित होता है, वहाँ से इस वृक्ष में अनेक धर्मों रूपी विभिन्न शाखायें प्रारम्भ होती हैं।

प्रत्येक धर्म की अपनी शाखा है और जैसे ही यह शाखायें तने से दूर फैलती हैं तो यह कमज़ोर और विभाजित होती जाती हैं।

हर धर्म इस परिवर्तन से गुज़रता है। जब तक कि हम आधुनिक लोह युग के भ्रमित समय (तमोप्रधान कलियुग अंत) तक नहीं पहुँच जाते हैं।

इस वृक्ष की चोटी पर श्वेत वस्त्रधारी ''प्रजापिता ब्रह्मा'' फ़रिश्ता रूप में दिखाई दे रहे हैं। यही वह माध्यम है जिसके द्वारा परमात्मा ने नवयुग का सृजन करने हेतु ईश्वरीय महावाक्य उच्चारण किये। उनके सानिध्य में पवित्र, योगी आत्मायें विराजमान हैं। वह पवित्रता उनकी योग अग्नि (मन को ईश्वर में लगाना) को तीव्र करती है।

इस प्रकार एक नये वृक्ष का पुन: वृक्षारोपण होता है। यह एक नूतन दैवी संस्कारों युक्त नव-युग के आगमन का संकेत है और इसी समय परिवर्तन के ईश्वरीय वचन की पूर्तता होती है।

काल-चक्र

काल चक्र में स्वर्ण युग का समय सुख और समृद्धि का युग है। मानव और विश्व दोनों में अद्भुत सामंजस्य है। त्रेतायुग की शुरूआत के साथ ही विश्व एवं आत्माओं की शक्ति क्षीण होने लगती है जिसके कारण त्रेता युग स्वर्ण युग जितना पवित्र नहीं, फिर भी श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण है।

द्वापर युग में मानव में देह-अभिमान की प्रवेशता होने के कारण आत्म स्मृति एवं पवित्रता और अधिक क्षीण हो गई। हमने कुदरत के नियमों का उल्लंघन किया। अहम् और क्रोध, दु:ख और अशान्ति प्रारम्भ हुई। अधोगति के अन्तिम चरण में विश्व और मानव दोनों ही समय के घोर अंधकार में प्रविष्ट हुए। दु:ख, भुखमरी और हिंसा ने प्रकृति और पुरुष दोनों को प्रभावित किया – यह कलियुग है और इस गहनतम अन्धकार के समय पर ज्ञान-सूर्य परमपिता परमात्मा 'शिव' पुन: उदित होकर हमें ज्ञान प्रकाश देते हैं। जो उनकी 'श्रीमत' को दिल से स्वीकार करते हैं, उनके लिये यह हीरे तुल्य युग है, इसे ही 'पुरुषोत्तम संगमयुग' कहा गया है। इसी युग में विश्व नव-निर्माण का महान कार्य चलता है।

संसार की चिकित्सा

संसार की चिकित्सा का उद्देश्य है – विश्व में पुन: शान्ति, व्यवस्था एवं सामंजस्य स्थापित करना। हमने विश्व के सिद्धांतों का उल्लंघन किया है। हमने पृथ्वी और वायु को प्रदूषित किया है और अब हमारा विश्व थकानग्रस्त हो गया है। विश्व के पुन: परिवर्तन एवं सफाई के लिये जो शस्त्र हमने अपने हाथों से बनाये हैं, वही कलियुगी सृष्टि के विनाश अर्थ निमित्त बन रहे हैं। परिवर्तन का समय नज़दीक आ गया है। मनोवृत्तियों के परिवर्तन से अब पुन: सुख-शान्ति स्थापित हो सकेगी और इस महा-परिवर्तन के पश्चात् यह पृथ्वी पुन: निवास योग्य एक सुन्दर और स्वस्थ स्थान बन जायेगा। यह हमारा सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ घर होगा। यहाँ से ही पवित्रता एवं श्रेष्ठतायुक्त समय की यात्रा पुन: आरम्भ होगी।

रत्न-पारखी

एक जौहरी के पास चमचमाते हुए माणिक, पुखराज, पन्ना और मूँगा अपने चमकीले आकर्षक रंगों में होते हैं। रत्नों का प्रथम रूप एक पत्थर का साधारण टुकड़ा है। जौहरी के अनुभवी नेत्र उस साधारण पत्थर में छिपे हुए हीरे को परख लेते हैं।

वह इसका मूल्य आँकने के बाद पत्थर को बहुत प्यार और धैर्यता से काटना एवं तराशना प्रारम्भ करता है और अंत में उसके हस्तों में एक तैयार चमचमाता हुआ 'हीरा' होता है। ऐसे ही परमपिता परमात्मा भी सर्वोच्च 'रत्न-पारखी' है। वह प्रत्येक मनुष्य आत्मा में विद्यमान विशेषता को परख कर उसे अति प्यार से तराशते एवं स्वच्छ करते हैं। जब तक कि वह दिव्य गुणों की चमक से जगमगाने न लगे।

दादा लेखराज पेशे से एक जौहरी थे, उनकी तीव्र परख-शक्ति ने उन्हें परमपिता परमात्मा के अलौकिक रूहानी रत्नों को ढूँढ निकालने एवं उन्हें तराशने के निमित्त स्वयं दाहिना हाथ बनाया। वह अब संगमयुग में 'प्रजापिता ब्रह्मा बाबा' कहलाते हैं।

मानवता के आदि पिता

प्रजापिता ब्रह्मा

विश्व के नव-निर्माण के लिए निराकार परमपिता परमात्मा ने जिस साकार माध्यम को चुना, उसे अलौकिक नाम दिया – ''प्रजापिता ब्रह्मा''। जब ब्रह्मा बाबा को इस बात की महसूसता हुई कि बाह्य परिवर्तन के लिए आन्तरिक परिवर्तन एक प्राथमिक आवश्यकता है, तो तुरन्त ही उन्होंने अपने आपको नवनिर्माण के कार्य में समर्पित किया।

ज्ञान और परमात्म-याद के द्वारा उन्होंने अपने जीवन को इतना अधिक आध्यात्मिक बना लिया कि उन्हें पूर्ण रूप से अपने आदि दिव्य गुणों की महसूसता होने लगी। परमात्मा की शुद्ध स्मृति ने उन्हें नि:स्वार्थ वृत्ति, उदारता एवं नम्रता से हर एक की सेवा करने के योग्य बना दिया। उनकी आध्यात्मिक और सामाजिक उपलब्धियाँ, हज़ारों लोगों को अपना जीवन बदलने के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन गई। व्यक्तिगत और विश्व स्तर पर जीवन को सुधारने के लिए शाश्वत सकारात्मक गुणों की जागृति और विकास का मार्ग अपनाया। इसलिए वे मानवता के आदि पिता, आदि देव, महावीर, आदम या एडम कहलाये।

बाह्य विश्व का परिवर्तन तभी सम्भव है जब आन्तरिक परिवर्तन हो। किसी भी स्तर पर परिवर्तन स्वयं से ही शुरू होगा – यह उनके लिये सत्य साबित हुआ और यही हम सभी के लिए भी सत्य है।

सम्पूर्ण विश्व-परिवर्तन

परिवर्तन के द्वारा ही उन्नति सम्भव है। जिस प्रकार एक तितली परिवर्तन की क्रिया से गुजर कर फिर से अपना रूप धारण कर लेती है, ठीक उसी प्रकार मानव भी अपने में परिवर्तन लाकर अपने को जड़जड़ीभूत तमोप्रधान अवस्था से नाविन्यपूर्ण, प्रफुल्लित एवं सुखदायी-सतोप्रधान अवस्था में परिवर्तित कर देता है।

आध्यात्मिक ज्ञान, सकारात्मक चिन्तन एवं ईश्वर की याद और सहयोग से मानव अपने पुराने दृष्टिकोण को छोड़ नये दृष्टिकोण अपनाकर एक सम्पूर्ण नवीन एवं सुसंस्कारित रूप को धारण कर सकता है।

अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय

परिपूर्ण विश्व की परिकल्पना को साकार रूप देने के लिए इस आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी में विज्ञान के साथ कला, काव्य, ध्वनि और प्रकाश का समन्वय किया गया है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह परिकल्पना जल्दी ही वास्तविकता का रूप धारण करेगी।

आपके सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद!